PRESS RELEASE – 600 Artists Sign Declaration For Democracy | Against Hate

Declaration – Artists Unite!

जैसे-जैसे 2019 के आम चुनाव नज़दीक आ रहे हैं, वैसे-वैसे स्पष्ट संकेत मिलने लगे हैं कि हिंसा और साम्प्रदायिक घृणा फैलाने का खेल और जोर पकड़ेगा. ऐसे माहौल में 'कलाकार' समुदाय को जितना मुखर होने की ज़रुरत आज है, वह पहले कभी नहीं रही. यह घोषणा पूरे देश के कलाकार समुदाय का इस माहौल के खिलाफ और शांति और सद्भावना के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का, न सिर्फ साझा बयान है अपितु तमाम लोकतान्त्रिक और धर्म-निरपेक्ष राजनीतिक दलों से अपील भी है कि वे भी नफरत की राजनीति खिलाफ कदम उठायें. यह घोषणा 17 दिसम्बर 2018 को, हस्ताक्षरकर्ताओं की सूची के साथ जारी की जायेगी.

यह घोषणा 2 और 3 मार्च, 2019 को दिल्ली में आयोजित किये जाने वाले कलाकारों के राष्ट्रीय सम्मलेन के लिए आमंत्रण भी है. यह सम्मेलन देश के अन्य शहरों और कस्बों में भी आयोजित किया जाएगा. इस सम्मेलन का उद्देश्य है कि हम सब, कला और साहित्य की उर्जा से सराबोर, एक आवाज़ में, नफरत की इस राजनीति का पुरजोर विरोध करें. इस सम्मलेन से दो मकसद पूरे होंगे – पहला तो यह कि तमाम कलाकार और साहित्यकार, प्रतिरोध के इस रचनात्मक और साझे मंच का हिस्सा बनेंगे; दूसरा उनके लिए मौका भी होगा कि वह देश के अन्य आन्दोलनों और सामुहिक-अभियानों के सम्पर्क में आयें और अपने संसाधनों को भी विस्तार दे सकें.

'एकजुट कलाकार' #MeToo अभियान का समर्थन करते हैं और हर जगह को यौन उत्पीड़न, यौन हमलों अथवा धमकियों से मुक्त रखे जाने के प्रति प्रतिबद्ध हैं.

For signature list - https://artistsunite.home.blog/2018/12/07/home/

एकजुट कलाकार

लोकतंत्र के हक़ में | नफरत के खिलाफ |

भारत के समकालीन इतिहास में नफरत, बंटवारे और बहिष्कार की राजनीति का इतना बोलबाला कभी नहीं रहा जो आज देखने को मिल रहा है. उसकी वजह है नफरतभरी वह विचारधारा जो आज शासन और

प्रशासन के हर हिस्से को अपने कब्ज़े में ले रही है. आज से पहले, इतने सोचे-समझे तरीके से मुसलमानों, ईसाईयों, आदिवासियों, दलितों, औरतों, ट्रांस,संघर्ष क्षेत्र के निवासियों और यहाँ तक कि बच्चों को भी, नफरत का शिकार नहीं बनाया गया.

नफरत की यह राजनीति जीवन के हर क्षेत्र पर पर लगातार हमले कर रही है; चाहे किसी के जीने का हक़ हो या प्यार करने का हक़, खान-पान हो या रीति-रिवाज, भाषा हो या इतिहास, हमला सब पर जारी है - इस देश के आम लोगों पर, उनकी विविधतापूर्ण संस्कृति पर. अफवाहों, घृणित प्रचार और सेंसरशिप के माध्यम से एवं इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत कर भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को तार-तार किया जा रहा है.

भारत विविधतापूर्ण संस्कृतियों का ऐसा समृद्ध कोष है जिसके पीछे अनेकों दर्शनशास्त्रीय, धार्मिक, साहित्यिक, भाषा और कला सम्बन्धी मंथनों का लम्बा इतिहास रहा है. संस्कृतियों के इस विराट कोष को प्रतिगामी शक्तियां एक ऐसे एकरूप और अखंड विचार में बदलना चाहती हैं जो मूलतः भारत की आत्मा के खिलाफ है. इस नफरतपूर्ण विचारधारा द्वारा नई परिभाषाएं गढ़ी जा रही हैं जो अलग-अलग रूपों में उद्घाटित भी हो रही हैं – कभी मदांध भीड़ द्वारा हत्याएं तो कभी लेखकों और कलाकारों पर हमले, कभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिंसक दखलंदाजी, तो कभी शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थाओं को ख़त्म करने और पाठ्यक्रमों में बदलाव जैसे कृत्य- इस विचारधारा की बानगी हैं. भारत की मुक्तिकामी और आध्यात्मिक विराट संभावनाओं पर ऐसी भाषा और विचार स्थानापन्न किये जा रहें हैं जिसके हर शब्द में मिथ्या प्रचार और रुदन है और जिसकी हर तस्वीर, मुहावरे और दृष्टि श्रेष्ठता के अहंकार से ग्रसित है.

संस्कृति पर हो रहे हमले दरअसल हमारे लोकतंत्र पर हमले हैं. जब सांस्कृतिक जीवन पर हमला होता है तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जाता है क्योंकि ऐसी स्थिति में वह जबान ही गुम हो जाती है जो हमारे साझे आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन, साझे इतिहास और साझी स्मृति को जोड़ती है. लोकतंत्र बहु संख्यकवादीकवायद नहीं है जिसका काम अपने शत्रुओं की पहचान करना और सभी पर एक भाषा, एक व्यवहार और एक संस्कृति थोपना हो जाये. लोकतंत्र न सिर्फ शांति का अपितु गरिमापूर्ण एवं समतापूर्ण जीवन जीने की सामुहिक इच्छा-शक्ति का उत्सव है.

कलाकार और संस्कृतिकर्मी होने के नाते हम नफरत की राजनीति का विरोध करते रहें हैं, करते रहेंगे. हम उस संस्कृति की रक्षा करते रहें हैं, करते रहेंगे जो संस्कृति मानवता और भाईचारे की बात करती है, जिस संस्कृति में भारतीय संविधान और मूलभूत अधिकारों की अनूगूंज है. हम जान रहें हैं कि नफरत की यह राजनीति उन लोकतांत्रिक और धर्म-निरपेक्ष

राजनीतिक दलों की नाकामयाबी पर सवार हो कर आई है जो संविधानरुपी लोकतांत्रिक घोषणापत्र को पूर्णतया लागू कर पाने में असफल रहे हैं. वर्ग, जाति, नस्ल, धर्म और लिंग के नाम पर घातक किस्म की गैर-बराबरी न सिर्फ देश के लिए एक नैतिक संकट है अपितु देश की राजनीति की असफलता को भी इंगित करती है. हालिया रिपोर्टों के मुताबिक 2017 में अर्जित कुल धन में से 73 फीसदी धन देश की एक फीसदी आबादी के हिस्से आया है. यह आंकड़ा न सिर्फ देश की गरीबी और मायूसी का आइना है अपितु यह भी दिखा रहा है कि देश में किस तरह का विकास किया जा रहा है. कृषि-संकट साल-दर-साल लाखों किसानों की जान ले रहा है. आदिवासियों को उनके जल, जंगल और ज़मीन से बेदखल किया जा रहा है. मजदूर-वर्ग का जीवन तो और नारकीय हो गया है. हम एक ऐसे विकास, जो लालच, लूट और मुनाफे की बुनियाद पर खड़ा है, के चलते तेजी से बड़ी पारिस्थितिकीय आपदा की ओर बढ़ रहें हैं.

हम सभी लोकतान्त्रिक, धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों से अपील करते हैं कि वे एक ऐसी राजनीति पर विचार करें जिसमें आर्थिक एवं सामाजिक न्याय, पारिस्थितिकीय और पर्यावर्णीय स्थिरता, बहु लता और विविधता, सत्ता का विकेंद्रीकरण और हस्तांतरण, नैतिकता, प्यार, करुणा एवं सहिष्णुता और नियम-क़ानून समाहित हों.

कलाकार और संस्कृतिकर्मी होने के नाते हम एक बार फिर से हम सब स्वयं को, इस नाज़ुक दौर में उस संस्कृति के रक्षा के लिए समर्पित करते हैं जो प्यार, बराबरी और भाईचारे की बात करती है. हम नफरत को अपनी मुहब्बत से मिटायेंगे. हम हिंसा का जवाब शांति से देंगे. अपने चित्रों, वक्तव्यों, शब्दों, संगीत और देह के माध्यम से हम भारत- देश के सांस्कृतिक विनाश का पुरजोर विरोध करेंगे.

For signature list - https://artistsunite.home.blog/2018/12/07/home/

Contact – notinmynamedelhi@gmail.com